'तीसरी कसम' में प्रयुक्त लोकगीत

- डा. पवनेश ठकुराठी

शोध सारांश-

प्रस्तुत शोध आलेख में कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम में प्रयुक्त बिहार के मैथिल अंचल से संबद्ध लोकगीतों का उद्घाटन करने के साथ-साथ उनके महत्व को भी उजागर किया गया है। शोध के प्रारंभ में कथाकार रेणु के जीवन पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द- *कथाकार, फणीश्वरनाथ रेणु, कहानी, तीसरी कसम, बिहार, मैथिल अंचल, लोकगीत, महत्व।*

शोध विस्तार-

सुप्रसिद्ध कथाकार फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले में फॉरबिसगंज के पास औराही हिंगना गाँव में हुआ था। उस समय यह पूर्णिया जिले में था। उनकी शिक्षा भारत और नेपाल में हुई। प्रारंभिक शिक्षा फारबिसगंज तथा अररिया में पूरी करने के बाद रेणु ने हाईस्कूल की परीक्षा नेपाल के विराटनगर आदर्श विद्यालय से उत्तीर्ण की। इन्होंने इन्टरमीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में उत्तीर्ण किया। इसके बाद वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। बाद में 1950 में रेणु जी ने नेपाली क्रांतिकारी आन्दोलन में भी हिस्सा लिया, जिसके परिणामस्वरुप नेपाल में जनतंत्र की स्थापना हुई। आपने पटना विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ छात्र संघर्ष समिति में सक्रिय रूप से भाग लिया और जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति में अहम भूमिका निभाई। रेणु जी ने हिन्दी में आंचलिक कथा साहित्य की नींव रखी।

फणीश्वरनाथ रेणु का पहला उपन्यास 'मैला आँचल' था, जो 1954 में प्रकाशित हुआ। इस आंचलिक उपन्यास ने रेणु जी को हिंदी साहित्य संसार में अपार ख्याति दिलाई। मैला आंचल के बाद रेणु जी के परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू बाबू रोड आदि उपन्यास प्रकाशित हुए। अपने प्रथम उपन्यास 'मैला आंचल' के लिये रेणु जी को पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

फणीश्वरनाथ रेणु ने कहानी लेखन की शुरुआत 1936 ई० के आसपास की। उस समय इनकी कुछ कहानियाँ प्रकाशित भी हुई थीं, किंतु वे किशोर रेणु की अपरिपक्व कहानियाँ थीं। 1942 के आंदोलन में गिरफ़्तार होने के बाद जब वे 1944 में जेल से मुक्त हुए, तब घर लौटने पर रेणु जी ने 'बटबाबा' नामक पहली परिपक्व कहानी लिखी। 'बटबाबा' 'साप्ताहिक विश्वमित्र' के 27 अगस्त, 1944 के अंक में प्रकाशित हुई। रेणु जी की दूसरी कहानी 'पहलवान की ढोलक' भी 11 दिसम्बर, 1944 को 'साप्ताहिक विश्वमित्र' में प्रकाशित हुई। वर्ष 1972 में रेणु जी ने अपनी अंतिम कहानी 'भित्तिचित्र की मयूरी' लिखी। उनकी अब तक उपलब्ध कुल कहानियों की संख्या 63 है। 'रेणु' को जितनी प्रसिद्धि उपन्यासों से मिली, उतनी ही प्रसिद्धि उनको कहानियों से भी मिली। 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'आदिम रात्रि की महक', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'अच्छे आदमी', 'सम्पूर्ण कहानियां', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'प्रतिनिधि कहानियाँ' आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

रेणु जी को प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परंपरा को आगे बढ़ाने वाला कथाकार कहा जाता है। इसीलिए इन्हें आजादी के बाद के प्रेमचंद की संज्ञा भी दी जाती है। रेणु जी के उपन्यास हों या फिर कहानियाँ सबमें बिहार की आंचलिक बोलियों का जैसा स्वाभाविक समावेश हुआ है, वैसा शायद ही किसी अन्य कथाकार के कथा साहित्य में हुआ हो।

फणीश्वरनाथ रेणु की तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम कहानी बिहार के दो आंचलिक चरित्रों हिराबाई और हिरामन के अव्यक्त प्रेम की रोमांचक कथा है। हिरामन एक गाड़ीवान है, जबकि हीराबाई एक नौटंकी वाली कंपनी की नृतकी। हिरामन अपनी बैलगाड़ी में हीराबाई को बिठाता है और यहीं से दोनों के मध्य प्रेम की धारा फूट पड़ती है और तब तक रह धारा बहती रहती है जब तक हीराबाई वापस अपनी कंपनी में नहीं चली जाती।

हिरामन और हीराबाई के बीच बहते प्रेम की धारा के साथ ही कहानी में कई स्थानों पर प्रेम को और अधिक सरस बनाती काव्यात्मक पदावलियां व आंचलिक गीतों की सुगंधित बयार भी बह उठती है। यात्रा के दौरान एक स्थान पर हिरामन हिराबाई को सरस्वती मानकर बिदेसिया नाच का बंदना गीत गाता चित्रित हुआ है-

"जै मैया सरोसती, अरजी करत बानी
हमरा पर होखू सहाई हे मैया, हमरा पर होखू सहाई !"[1]

वस्तुतः हीराबाई के सम्मोहन में बंधते ही हिरामन को तरह तरह के गीत याद आने लगते हैं। जब हीराबाई एक कागज के टुकड़े पर आंख गड़ाए हुए रहती है, तब वह छोकरा नाच के गीत को स्मरण कर गाने लगता है-

"सजनवा बैरी हो गय हमार ! सजनवा..!
अरे चिठिया होते सब कोई बांचे, चिठिया हो तो..
हाय ! करमवा, होय करमवा.." [2]

जब हिरामन की बैलगाड़ी तेगछिया गांव के बीच से निकलती है, तो हिरामन की परदे वाली गाड़ी को देखकर गांव के बच्चे तालियाँ बजा बजाकर गीत गाने लगते हैं-

"लाली लाली डोलिया में
लाली रे दुल्हनिया
पान खाए...!"[3]

तेगछिया गांव से बाहर निकलने के बाद हिरामन भी हिंदी फिल्म का गीत गुनगुनाने लगता है-

"सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है
नहीं हाथी, नहीं घोड़ा, नहीं गाड़ी
वहाँ पैदल ही जाना है। सजन रे.." [4]

हिरामन हीराबाई को यात्रा कराते हुए गीत ही नहीं बल्कि कथाएँ भी सुनाता है। महुआ घटवारिन की लोककथा सुनाते समय वह बीच बीच में उसे लोकगीत भी सुनाता जाता है-

"हे अ अ अ सावना भादवा के र
उमड़ल नदिया गे में मैं यो ओ ओ

मैयो गे रैनि भयावनि हे ए ए ए
तड़का तड़के धड़के करेज आ आ मोरा
कि हमहूँ जे बार नान्ही रे ए ए.....
हूँ ऊं ऊं रे डाइनिया मैयों मोरी ई ई
नोनवा चटाई काहे नाहिं मारलि सौरी घर अ अ
एहि दिनवां खातिर छिनरो घिया
तेंहु पोसलि कि नेनू दूध उगटन..."[5]

हिरामन के गीतों को सुनकर हीराबाई भी उसके रंग में रंग जाती है और वह भी गीत गाने लगती है-
"हे अ अ अ सावना भादवा के र...."[6]

तिसरी कसम कहानी में हीराबाई को लक्ष्य कर एक शायरी रची गई है। वस्तुतः यह शायरी लोक व युवाओं की स्वच्छंदता को व्यक्त करती है-
"तेरी बांकी अदा पर मैं खुद हूँ फिदा,
तेरी चाहत को दिलबर बयां क्या करूँ !
यही ख्वाहिश है कि इ इ इ तू मुझको देखा करे
और दिलोजान मैं तुमको देखा करूँ।"[7]

इस कहानी में हीराबाई के मारे गए गुलफाम गीत गाने का भी उल्लेख हुआ है- "हीराबाई रोती हुई गा रही थी-
अजी हां मारे गए गुलफाम !"[8]

अतः स्पष्ट है कि कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु की 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' कहानी में हीराबाई और हिरामन दो प्रेमियों के माध्यम से बिहार के मैथिल अंचल से संबद्ध लोकगीत और हिंदी गीतों का चित्रण हुआ है। कहानी के गीतों ने बिहार के मैथिल अंचल की लोक संस्कृति को तो उद्घाटित किया ही है, साथ ही कहानी को गतिशीलता भी प्रदान की है। इन गीतों ने कहानी में चित्रित प्रेम को और अधिक सरस, सहज और स्वाभाविक बना दिया है।

संदर्भ-

1. मेरी प्रिय कहानियाँ, फणीश्वरनाथ रेणु, राजपाल एंड संज, दिल्ली, संस्करण, 2016, पृ० 29
2. वही, पृ० 29
3. वही, पृ० 32
4. वही, पृ० 32
5. वही, पृ० 34
6. वही, पृ० 36
7. वही, पृ० 41
8. वही, पृ० 47

अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) -263601, मो0 952855705, वेबसाइट- www.drpawanesh.com